दिवाली प्रिय पूजियेगा

वर्षों दिवाली करते रहे हो । तो भी अन्धेर घुप में पड़े हो ।।
माया अन्धेर अब त्यागियेगा । प्रज्ञा दिवाली प्रिय पूजियेगा ।।
पूजा अनात्मा नहीं आत्म पूजा । पूजा करे 'हो' नित भूत दूजा ।।
ना दूसरे से सुख पाइयेगा । प्रज्ञा दिवाली प्रिय पूजियेगा ।।
क्या सूर्य को धूप छुपा सके है । क्या सिंधु को तरंग दबा सके है ।।
ना झूठ से सत्य छिपाइयेगा । प्रज्ञा दिवाली प्रिय पूजियेगा ।।
दृष्टा तथा दृश्य जुदे जुदे हैं । अज्ञान से भासते एक से हैं ।।
अज्ञान की ऐनक तोड़ियेगा । प्रज्ञा दिवाली प्रिय पूजियेगा ।।
बाले दीये बाह्य किया उजेरा । फैला हुआ है घर में अंधेरा ।।
अन्धेर ऐसा मत कीजियेगा । प्रज्ञा दिवाली प्रिया पूजियेगा ।।
'योगांग झाडू' घर चित्त झाड़ो । विक्षेप कूड़ा, 'सब झाड़ काढ़ो' ।।
अभ्यास पीता फिर फेरियगा । प्रज्ञा दिवाली प्रिय पूजियेगा ।।
प्रजा मिला प्राणन बत्ती घालो । वैराग्य घी दीपक ज्ञान बालो ।।
जो वस्तु जैसी तस देखियेगा । प्रज्ञा दिवाली प्रिय पूजियेगा ।।
ऐसी दिवाली श्रुति संत गाई । अत्रेय योगी करके दिखाई ।।
भोला ! कहे मित्र न चूकियेगा । प्रज्ञा दिवाली प्रिय पूजियेगा ।।

www.balsanskarkendra.org